नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

क्रिकेट की महाशक्ति बना भारत

रविवार को भारत ने इतिहास रच दिया. नवी मुंबई के डीवाई पाटिल स्टेडियम में भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने 2025 आईसीसी वनडे विश्व कप का खिताब जीतकर वह कारनामा कर दिखाया, जिसका इंतजार पीढ़ियों से था. हरमनप्रीत कौर की कप्तानी में भारत ने दक्षिण अफ्रीका को 52 रनों से हराया और महिलाओं के क्रिकेट में अपना पहला विश्व खिताब हासिल किया. यह केवल एक खेल उपलब्धि नहीं, बल्कि उस सामाजिक बदलाव का प्रतीक है जो भारत में खेल संस्कृति के स्तर पर घटित हो रही है. पिछले दो दशकों में भारत ने वैश्विक क्रिकेट पर सम्पूर्ण प्रभाव स्थापित कर लिया है. पुरुष टीम पहले ही टेस्ट, वनडे और टी20 – तीनों प्रारूपों में शीर्ष स्थान पर है.

महिला टीम की यह जीत इस दबदबे को एक नई ऊंचाई देती है. अब दुनिया स्वीकार कर रही है कि भारत न केवल क्रिकेट का आर्थिक केंद्र है, बल्कि खेल प्रदर्शन में भी अग्रणी है .क्रिकेट अब केवल बड़े शहरों या अभिजात वर्ग का खेल नहीं रहा. आज देश के सुदूर गांवों और कस्बों से खिलाड़ी उभर रहे हैं, जो सीमित संसाधनों में भी विश्वस्तरीय प्रदर्शन कर रहे हैं. शेफाली वर्मा और दीप्ति शर्मा जैसी खिलाड़ियों की कहानियां इस बदलाव की गवाही देती हैं. उत्तर प्रदेश, हरियाणा, झारखंड और मणिपुर जैसे राज्यों से निकलकर भारतीय खिलाड़ी अब अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत के आत्मविश्वास की पहचान बन चुके हैं. इस क्रांति के केंद्र में वह आर्थिक ढांचा है जिसने क्रिकेट को उद्योग का रूप दिया है.

इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) आज दुनिया की सबसे धनाढ्य और लोकप्रिय खेल लीगों में से एक है. इसके साथ महिला प्रीमियर लीग (डब्लूपीएल) ने भी महिला क्रिकेट के लिए स्थायी मंच तैयार किया है. इन आयोजनों ने न केवल खिलाड़ियों को आर्थिक स्वतंत्रता दी है, बल्कि हजारों नौकरियों का सृजन भी किया है– कोचिंग, इवेंट मैनेजमेंट, खेल पत्रकारिता, मर्चेंडाइजिंग, विज्ञापन और ब्रॉडकास्टिंग में नई संभावनाएं खुली हैं. क्रिकेट ने भारत की अर्थव्यवस्था में परोक्ष रूप से भी नई ऊर्जा भरी है. टूर्नामेंट्स के दौरान पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्र में उछाल आता है, स्टेडियम विकास से स्थानीय बुनियादी ढांचा सुधरता है और छोटे उद्योगों के लिए बाजार सक्रिय होता है. भारत में खेल अब मनोरंजन से आगे बढ़कर आर्थिक सशक्तिकरण का माध्यम बन चुका है.

महिला विश्व कप की यह जीत केवल क्रिकेट तक सीमित नहीं रहेगी. यह पूरे भारतीय खेल जगत के लिए प्रेरणा है. जब महिला खिलाड़ी वैश्विक मंच पर देश का झंडा फहराती हैं, तो वह उस सोच को तोड़ती हैं जो वर्षों से खेल को पुरुष-प्रधान मानती रही है.

सरकार और निजी क्षेत्र द्वारा अब खेल संरचना, फिटनेस और प्रतिभा विकास में निवेश बढ़ाने की संभावना और मजबूत हुई है. यह क्षण केवल एक ट्रॉफी जीतने का नहीं, बल्कि उन असंख्य संभावनाओं के उजागर होने का है जो भारत को वास्तविक 'स्पोर्ट्स नेशन' बनाने की दिशा में ले जा रही हैं. हर मैदान पर अब यह आवाज गूंज रही है कि खेल किसी वर्ग या लिंग की सीमाओं में बंधा नहीं है. टीम इंडिया की यह ऐतिहासिक सफलता उस भारत की घोषणा है जो आत्मविश्वास से विश्व खेल मानचित्र पर छा गया है, एक ऐसा भारत जिसने क्रिकेट को न केवल खेल बल्कि राष्ट्रीय अस्मिता और आर्थिक प्रगति का प्रतीक बना दिया है.

ऐसा क्या हुआ कि बिहार और एमपी अपनी समृद्धि को बनाए नहीं रख पाए?

विचारों से संस्थाएं, संस्थाओं से समृद्धि

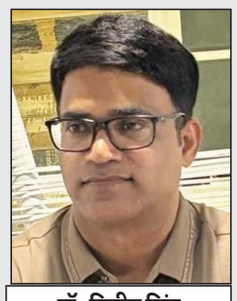

डॉ. दिलीप सिंह

1950 के दशक में बिहार, मध्यप्रदेश से आगे था, लेकिन ऐसा क्या हुआ कि 1980 के मध्य तक ये दोनों राज्य बीमारू राज्य कहलाने लगे, और आज भी इन दोनों राज्यों में गरीबी और बेरोज़गारी सबसे बड़ी समस्या बनी हुई है. यदि हम इन दोनों राज्यों का इतिहास देखें तो पाएंगे कि सम्राट अशोक के समय बिहार एक विकसित राज्य रहा, उसी प्रकार मध्यप्रदेश भी संग्राम शाह और रानी दुर्गावती के काल में समृद्ध था. बिहार ने बुद्ध जैसे महामानव को जन्म दिया, और मध्यप्रदेश ने डॉ. भीमराव अंबेडकर जैसे विचारक को. दोनों ने न केवल भारत, बल्कि पूरी दुनिया को समृद्धि और विकास का मानवीय मॉडल दिया. तो फिर ऐसा क्या हुआ कि हम अपनी उस समृद्धि को बनाए नहीं रख पाए?

ऐतिहासिक रूप से हम एक खुली अर्थव्यवस्था रहे हैं, किंतु आज़ादी के समय हमारी आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी. ऐसे में बिना अधिक जोखिम उठाए हमने स्वावलंबन आधारित मॉडल को अपनाया. भारत की अर्थव्यवस्था राज्य-प्रधान हो गई, अर्थात् हमने सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों के माध्यम से विकास और जनकल्याण का मार्ग चुना, जिसे ट्रिकल डाउन थ्योरी के नाम से भी जाना जाता है. लेकिन वास्तविकता में ऐसा हुआ नहीं– विकास ऊपर के स्तर पर ही सीमित रह गया. संसाधनों की जमाखोरी और पूंजी व अन्य साधनों की बर्बादी ने देश पर भारी बोझ डाला. तब जाकर यह समझ आया कि हमें कुशल मानव पूंजी की आवश्यकता है. इसके बाद देश में शिक्षा, कौशल और प्रशिक्षण पर ज़ोर दिया गया.

अब हमारे पास कुशल श्रमिक बल भी है, संसाधन भी हैं – फिर भी प्रश्न यह उठता है कि हम विकसित राष्ट्र क्यों नहीं बन पाए? और विश्व में केवल 10 प्रतिशत से भी कम देश ही विकसित क्यों हैं? इस प्रश्न का उत्तर हमें पिछले वर्षों के नोबेल पुरस्कारों की आर्थिक यात्रा से मिलता है – जो यह दिखाती है कि समृद्धि के लिए समय-समय पर हमें किस प्रकार के ठोस कदम और नीतिगत निर्णय लेने आवश्यक हैं.

2020 का पुरस्कार पॉल आर. मिल्ग्रॉम और रॉबर्ट बी. विल्सन को दिया गया – नीलामी सिद्धांत में सुधार और नए नीलामी प्रारूपों के आविष्कार के लिए. उस समय अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में दुर्लभ खनिजों और महत्वपूर्ण संसाधनों की वैश्विक होड़अपने शिखर पर थी. इस संदर्भ में उनकी नीलामी प्रणाली पर की गई खोजें अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध हुईं, क्योंकि दुनिया जीवाश्म ईंधनों से हटकर नवीकरणीय ऊर्जा की ओर संक्रमण की प्रक्रिया में थी. 2021 में डेविड कार्ड को उनके श्रम अर्थशास्त्र में प्रायोगिक योगदान के लिए सम्मानित किया गया. कार्ड के शोध ने यह दिखाया कि प्रवासन से स्थानीय मजदूरी पर नकारात्मक असर नहीं पड़ता और न्यूनतम वेतन निर्धारण से रोजगार सृजन बाधित नहीं होता. उनके साथ जोशुआ एंग्रिस्ट और गुइडो इम्बेन्स को शिक्षा पर उनके शोध के लिए पुरस्कृत किया गया– जब दुनिया शिक्षा की गुणवत्ता और अवसरों की समानता पर गंभीर बहस कर रही थी.

2022 में जब महामारी का प्रभाव अभी भी विश्व को झकझोर रहा था, तब चिकित्सा क्षेत्र से परे इसका सबसे गहरा असरवित्तीय बाज़ारोंपर देखा गया. नोबेल समिति ने उस वर्ष ऐसे अनुसंधानों को रेखांकित किया जिन्होंने आर्थिक नीतियों और संकट प्रबंधन को नई दिशा दी. 2023 में नोबेल पुरस्कार क्लॉडिया गोल्डिन को मिला. उनका शोध अत्यंत प्रासंगिक था, क्योंकि राष्ट्र उस समय महामारी से उबर रहे थे – और महामारी ने महिलाओं के कार्य-परिणामों को पुरुषों की तुलना में कहीं अधिक प्रभावित किया था. गोल्डिन का कार्य यह समझने में मदद करता है किश्रम बाज़ार में लैंगिक असमानताकिस प्रकार दीर्घकालीन विकास को प्रभावित करती है. पिछले वर्ष (2024) का अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार इस बात पर केंद्रित था कि संस्थाएँ कैसे बनती हैं और वे समृद्धि को कैसे प्रभावित करती हैं. यह वही समय था जब विश्वभर में लोकतांत्रिक संस्थाओं – विशेषकर शैक्षणिक संस्थानों, न्यायपालिका और निर्वाचन आयोग पर हमले अपने चरम पर थे.

इस पृष्ठभूमि में यह स्वीकार करना अनिवार्य है कि लोकतंत्र और राज्य की समृद्धि का असली आधार संस्थाएँ ही होती हैं.

भारत के संदर्भ में, यह संदेश विशेष रूप से प्रासंगिक है. यदि हमें सस्टेनेबल समृद्धि की ओर अग्रसर होना है, तो हमें ऐसी प्रौद्योगिकीय संस्थाओं का निर्माण करना होगा जो हमारी अर्थव्यवस्था के इंजन बनें. परंतु केवल नई संस्थाएँ बनाना पर्याप्त नहीं होगा– हमें उन मौजूदा संस्थानों को भी मज़बूत करना होगा जैसे न्यायपालिका, कानून-व्यवस्था, शैक्षणिक संस्थान आदि लेखक का मत है कि समाज और संस्थानों की समृद्धि, उस समाज में स्थापित मूल्य या विचार तय करते हैं.

राष्ट्रीय जलमार्गों से सशक्त होता लॉजिस्टिक्स तंत्र

विजय कुमार

भविष्य के एक ऐसे भारत की कल्पना करें जहां मालढुलाई ट्रकों के बजाय नावों से हो, लॉजिस्टिक्स गलियारे राजमार्गों की जगह नदियों के किनारे बने हों और व्यापार बढ़ने के बाद भी कार्बन उत्स र्जन कम हो. ऐसा भविष्य कोरी कल्पना नहीं है बल्कि हमारी पहुंच के दायरे में है. देश को विकसित भारत और सही मायने में आत्मनिर्भर बनने के लिए अंतर्देशीय जल परिवहन (आईडब्ल्यू टी) को टिकाऊ लॉजिस्टिक्स क्रांति की रीढ़ बनना होगा.

> जल परिवहन दक्षता, अर्थव्यणवस्थो और पारिस्थितिकी सभी के लिहाज से उयुक्त है. मुंबई में चल रहे इंडिया मैरीटाइम वीक में वैश्विक और स्था नीय नीति निर्माता, लॉजिस्टिक्स की दिग्ग्ज कंपनियों से लेकर नए लोगों तक, सरकारें, निवेशक, मैरीटाइम विशेष, पर्यावरणविद और उत्साही लोग इस दिशा में अगला कदम उठाने के लिए अपने विचार प्रस्तुनत करेंगे. यह आयोजन कार्गो-केंद्रित नदी परिवहन के भविष्य की झलक दिखाएगा कि कैसे गंगा, ब्रह्मपुत्र और दूसरे जलमार्ग हरे-भरे और ज्या दा कुशल भारत की रीढ़ बन सकते हैं. नदियों ने हमारी सभ्यता बनाई है. अपनी समृद्ध विरासत को अपनाकर और दुनिया की श्रेष्ठष कार्यप्रणाली के साथ भारत एक नए और आधुनिक अंतर्देशीय जल परिवहन प्रणाली के जरिये टिकाऊ अर्थव्यवस्थाश बनाने के लिए तैयार है. नदी की धारा आखिरकार हमारे पक्ष में बह रही है, जो हरित लॉजिस्टिक्स के भविष्य को ताकत दे रही है.

भारत 4,000 वर्षों से नदियों के माध्यंम से व्यापार करता आ रहा है. नदियों ने लोथल को रोम से, बंगाल को बर्मा से और असम को शेष दक्षिण-पूर्व एशिया से जोड़ा है. हालांकि समय के साथ सड़कों और रेलवे ने अपनी रफ्तार और स्टील की चमक से नदियों को पीछे धकेल दिया. लेकिन अब जलवायु परिवर्तन के चलते आर्थिक दबाव के इस दौर में हालात बदल रहे हैं. ऐसा नदियों के प्रति प्रेम की वजह से नहीं, बल्कि जरूरत के कारण हो रहा है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अंतर्देशीय जलमार्ग पर अभूतपूर्व नीतिगत ध्या न दिया जा रहा है. राष्ट्रीय जलमार्गों पर 2013-14 में कार्गो की आवाजाही 18.1 मिलियन मेट्रिक टन थी जो 2024-25 में बढ़कर 145.84 मिलियन मेट्रिक टन हो गई है. जलमार्गों से माल-ढुलाई का खर्च भी कम आता है. जलमार्ग से माल-ढुलाई का खर्च 1.20 रुपये प्रति टन-किलोमीटर है जबकि रेल से 1.40 रुपये और सड़क से 2.28 रुपये प्रति टन-किलोमीटर का खर्च आता है. जलमार्ग किफायती और ईंधन-कुशल होते हैं.

जलमार्ग से परिवहन पर प्रति टन-किलोमीटर केवल 0.0048 लीटर ईंधन की खपत होती है जबकि सड़क से 0.0313 लीटर और रेल मार्ग से 0.0089 लीटर खर्च होता है. यह किसी भी सप्लाई चेन मैनेजमेंट के लिए आंखें खोलने वाली बात है. सबसे महत्वेपूर्ण यह है कि नदी परिवहन से प्रति टन-किलोमीटर ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन सड़क परिवहन की तुलना में महज 20 प्रतिशत होता है. गंगा या ब्रह्मपुत्र में चलने वाला हर जहाज न केवल सामान ढो रहे हैं, बल्कि भारत के कार्बन उत्सरर्जन को कम करने की सजगता को भी स्पिष्ट, रूप से परिलक्षित कर रहा है. भारत सरकार ने 2016 में राष्ट्रीय जलमार्ग-1 पर जलमार्ग विकास परियोजना को मंजूरी दी थी, जिससे गंगा-भागीरथी-हुगली नदी प्रणाली में कार्गो की आवाजाही बढ़ रही है. वाराणसी और साहिबगंज जैसे मल्टीमोडल लॉजिस्टिक्स हब राष्ट्रीय राजमार्ग लॉजिस्टिक्स प्रबंधन लिमिटेड (एनएचएलएमएल) के साथ साझेदारी में विकसित किए जा रहे हैं तथा इंडियन पोर्ट रेल एंड रोपवे कॉरपोरेशन लिमिटेड (आईपीआरसीएल) और डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (डीएफसीसीआईएल) के जरिये रेल लिंक बनाए जा रहे हैं ताकि नदी, रेल और सड़क को सुगमता से जोड़ा जा सके.

राष्ट्रीय जलमार्ग-2 (ब्रह्मपुत्र नदी) पर जोगीघोपा आईडब्ल्यूफ टी टर्मिनल को मल्टी-मोडल लॉजिस्टिक्स पार्क (एमएमएलपी) से जोड़ा जा रहा है, जो भारत-बांग्लादेश प्रोटोकॉल मार्ग के जरिये कोलकाता और हल्दिया बंदरगाह को जोड़ता है. अंतर्देशीय जल परिवहन की क्षमता अब सा दिखने लगी है. असम में नुमालीगढ़ रिफाइनरी लिमिटेड (एनआरएल) की विस्तारर परियोजना का हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उद्घाटन किया था. रिफाइनरी के लिए ओवर डाइमेंशनल कार्गो (ओडीसी) और ओवर वेट कार्गो (ओडब्यूरप सी) जैसे भारी उपकरण आईडब्यू एआई की देखरेख में भारत-बांग्लादेश प्रोटोकॉल मार्ग और ब्रह्मपुत्र नदी के जरिये ट्रांसपोर्ट किए गए थे. इसमें 24 कंसाइनमेंट शामिल थे जो एनआरएल जेट्टी तक आसानी से और सुरक्षित रूप से पहुंचाए गए. इससे भीड़भाड़ वाले राजमार्गों और बड़े कार्गो के लिए सड़क परिवहन की मुश्किलों से भी बचा गया.

इस ऑपरेशन से पता चला कि नदी लॉजिस्टिक्स न केवल पर्यावरण के लिए अच्छा है, बल्कि यह भारत के सबसे मुश्किल औद्योगिक शिपमेंट को संभालने में भी पूरी तरह से सक्षम है. सही मायने में यह लागत-प्रभावी, सुरक्षा और सतत परिवहन का बेजोड़ मेल है. उद्योग के लिए यह अतीत की यादों में खोने या राष्ट्रीय गर्व की ही बात नहीं है बल्कि यह मार्जिन और मार्केट के बारे में है.

(लेखक पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय में सचिव हैं)

बड़े पैमाने पर नौकरियां छीन रहा है एआई

अमेजन, लुफ्तांसा, इंटेल व सेल्सफोर्स में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को अपनाने की वजह से कर्मचारियों की छटनी हो रही है. अमेजन जैसी ई-कामर्स कंपनी 14,000 लोगों को नौकरी से हटा रही है. अगले वर्ष और भी कर्मचारी कम कर दिए जाएंगे. लगभग 1,000 भारतीय कर्मचारियों की अमेजन छुट्टी कर देगी. कंपनी के सीईओ एंडी जैसी के अनुसार एआई के इस्तेमाल की वजह से बहुत कम कर्मियों की आवश्यकता रह गई है. आगामी कुछ वर्षों में कारपोरेट वर्कफोर्स भी कम कर दिया जाएगा. इसके बावजूद सारा कामकाज सक्षम तरीके से होता रहेगा. इंटरनेट आने के बाद से एआई एक बड़ा बदलाव लानेवाली तकनीक के रूप में सामने आई है. इससे कंपनियों में नवोन्मेष को बढ़ावा मिला है और कामकाज में तेजी आई है. कम खर्च में कंपनियां अपने ग्राहकों की सेवा और व्यवसाय करने में सक्षम होती जा रही हैं. गत वर्ष हुए आर्थिक सर्वे ने स्पष्ट कर दिया था कि भारत में बिजनेस प्रोसेसिंग आउटसोर्सिंग जैसे बैक एंड आपरेशन से जुड़े कर्मचारियों का भविष्य अब अनिश्चित हो गया है. बड़े तकनीकी संस्थान व एयरलाइन कंपनियां एआई से अर्जित होनेवाली कुशलता का हवाला देकर कर्मचारियों को लेऑफ दे रही हैं. जब गुणवत्तापूर्ण काम एआई से हो जाता है तो इतना स्टाफ क्यों रखा जाए? 2025 के मध्य तक एआई की वजह से 78,000 टेक कर्मियों ने अपनी नौकरी खो दी. प्रतिदिन लगभग 500 कर्मचारी बेरोजगार होते चले गए. आईबीएम, माइक्रोसाफ्ट के अलावा सिटी ग्रुप, जेसी मॉर्गन व गोल्डमैन साक्स भी अपनी कर्मचारी छटनी या लेऑफ की वजह से चर्चित रहे. जर्मन एयरलाइंस लुफ्तांसा ने 2030 तक अपनी 4,000 नौकरियां खत्म करने की योजना घोषित की है. एआई के जरिए उसके अधिकांश काम स्वचालित हो जाएंगे. इसी प्रकार इंटेल 2025 के अंत तक 24,000 कर्मचारियों को नौकरी से हटा देगी और एआई आटोमेशन को अपनाएगी. सेल्सफोर्स ने ग्राहक सेवा क्षेत्र के 4,000 कर्मियों को सेवा से हटा दिया है.

डुओलिंगो ने मानव कर्मियों द्वारा किए जानेवाले सभी काम को एआई से रिप्लेस करने का कदम उठाने का संकेत दिया है. भारत में पेटीएम भी आगे चलकर एआई का इस्तेमाल किसी कर्मचारी के स्थान पर करने लगेगा.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

फेल हुआ नकली बारिश का खेल रेत से कैसे निकालोगे तेल

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कृत्रिम वर्षा कराने की अपनी सनक के चलते क्लाउड सीडिंग के प्रयोग में टैक्सपेयर के 34 करोड़ रुपये बर्बाद कर दिये और एक बूंद भी पानी नहीं बरसा.'

हमने कहा, 'हर प्रयोग को सफलता नहीं मिलती लेकिन इसकी वजह से वैज्ञानिक एक्सपेरिमेंट करना नहीं रोक देते. वह चांस लेकर देखते हैं. रेखा गुप्ता ने भी यही करके देखा. उन्हें 3 विशेषज्ञ एजेंसियों ने ठंड के मौसम में दिल्ली में क्लाउड सीडिंग नहीं करने की सलाह दी थी, लेकिन उन्होंने फिर भी मनमानी की. यह स्त्री हठ का मामला है. कैकयी ने राम को वनवास देने की जिद पूरी करायी थी. द्रौपदी ने भी दु:शासन के खून से अपने केशों को धोने की प्रतिज्ञा की वजह से महाभारत युद्ध करवाया था. कोई महिला मन में जो बात ठान लेती है उसे पूरा किये बिना नहीं मानती. दिल्ली में ऐसे बादल थे जिनमें बरसने लायक पानी नहीं था. फिर भी ऐसे बेकार बादलों पर हवाई जहाज से चांदी के सुक्ष्म कणों वाला सिल्वर नाइट्रेट

बरसाया गया. यह रेत से तेल निकालने जैसी बेतुकी कोशिश थी. सीएम का अपनी जेब से क्या गया ! सरकारी खजाने से जनता के टैक्स का पैसा व्यर्थ ही उड़ा दिया. बादल सावन में बरसते हैं, कार्तिक में नहीं !'

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज रेखा गुप्ता का इरादा था कि धूल और धुएं से छुटकारा दिलाने के लिए नकली बारिश करवा दी जाए. उनका एक्सपेरिमेंट करने का शौक देखते हुए उन्हें सीधे इसरो में भेज देना चाहिए जहां वह वैज्ञानिकों की सलाह नजरअंदाज कर अंतरिक्ष में राकेट छोड़ती रहेगी. प्रयोग सफल हुआ तो वाहवाही, नहीं तो धन की बर्बादी ! रेखा गुप्ता को वर्षा से इतना ही लगाव था तो उन्हें पहले राजकपूर-नरगिस की फिल्म बरसात, देव आनंद और नूतन की बारिश, भारतभूषण और मधुबाला की बरसात की रात जैसी फिल्में देख लेनी चाहिए थी. विधि विधान के साथ जल के देवता वरुण और देवराज इंद्र से प्रार्थना के बाद कृत्रिम वर्षा का प्रयोग करना था.'

हमने कहा, आपने पुरानी फिल्म छाया का गीत सुना होगा-इतना ना मुझसे तू प्यार जता कि मैं एक बादल आवारा ! ऐसे ही बदचलन बादल ने रेखा का दिल तोड़ दिया.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12070

- डॉ. सागर खादीवाला

ऊपर से नीचे

1. एक प्रसिद्ध संत, महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध कवि 2. एक प्राचीन अख, कसरत के सामानों में से एक 3. शांतिमय (उर्दू) 4. जिसे चेतना हो, जिसे ज्ञान हो 5. तपना, बहुत गरम होना, संतप्त होना 6. संगीत प्रिय, संगीत का रसिक 8. भीषण या विकट दुर्घटना, दंगा-फसाद (उर्दू) 12. मुसलमानों की मक्का की तीर्थयात्रा (उर्दू) 15. आशय, अर्थ, तात्पर्य (उर्दू) 16. पत्र वाहक, चिट्ठी पत्री या पत्र आदि पहुंचाने वाला 17. फल आदि का आवरण, ऊपरी परत 20. खानदान, परिवार 21. तपी धातु को पीट और खींचकर बनाया हुआ तागा 23. पुरुष, आदमी, पुरुष जाति का

बाएं से दाएं

1. ऑरेंज सिटी (संतरा नगरी) के नाम से प्रसिद्ध शहर 4. राणा प्रताप के घोड़े का नाम 7. आक का पौधा 8. झरोखा, खिड़की (सं.) 9. बिना हाथ का, न करने योग्य (सं.) 10. सुंघनी, वह औषधि जो नाक से सूंघी जाए 11. भ्रम, मन में होने वाली मिथ्या धारणा, झूठा संदेह (उर्दू) 13. रखने वाला, पत्नी, सूली, फांसी 14. जनसाधारण की राय 16. लाज, लज्जा (उर्दू) 18. वीर, बहादुर, योद्धा 19. एक बंगाली मिठाई, लौंग का पेड़ या उसकी शाखा 22. कर्ण, श्रवणेंद्रिय 24. अच्छा होता यदि (उर्दू) 25. कायम, स्थित (उर्दू)

Solution 12069

स	या	ना		सं	चा	ल	न
हा		र	ज	वा	र		म
नु	क्स		न	र		ना	क
भू		ब	क	ना		रा	ह
ति	त	ली			ब	ज	रा
	र		ति	रं	गा		म
म	क	ब	रा		व	श	
ई	श		हा		त	र	क्की

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में आर्थिक योजनाओं में सुधार होगा, मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, वर्ष के मध्य में भाईयों के सहयोग से शत्रु पक्ष परास्त होगा, वाहन पशु आदि से लाभ होगा, आर्थिक क्षेत्र में कमी केकारण योजनायें वाधित होंगी, परिश्रम की अधिकता रहेगी, प्रियजनों के कारण कार्यों में हानि हो सकती है.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों का वाहन पशु आदि का लाभ प्राप्त होगा, भाईयों के सहयोग से शत्रु पक्ष परास्त होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक योजनाओं में वृद्धि होगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को वाणी कठोरता के कारण विवादों का सामना करना पड़ सकता है, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को आर्थिक कार्यों में योजनायें बाधित होंगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को आर्थिक मामलों में सावधानी रखकर कार्य करना हितकर रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को यात्र में हानि हो सकती है.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, परोपकारी, बुद्धिमान, परिश्रमी, और प्रगतिशील होगा, शिक्षा में अग्रणी रहेगा, अनेक विद्याओं का ज्ञाता होगा, उदर रोग एवं चर्मरोग से कष्ट होगा, माता पिता का भक्त होगा.

मेष- समय देखकर अपने कार्य में बदलाव करेंगे, आय का नया मार्ग प्रशस्त होगा, स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, शुभ संदेश मिलेगा.

वृषभ- पारिवारिक समस्या के समाधान के आसार बनेंगे, छोटी सी बात पर उत्तेजित न हों, संयम एवं सतर्कता से काम लें, लाभदायक अवसर प्राप्त होने का योग है.

मिथुन- यात्रा में समय और धन की बर्बादी होगी, विलासिता के कार्यों में खर्च होगा, पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी, आर्थिक क्षेत्र में प्रगति होगी.

कर्क- कार्यक्षेत्र में कुछ अच्छा प्रस्ताव मिल सकते हैं, विरोधियों से सावधान रहें, आर्थिक मामलों में सफलता प्राप्त होगी, दस्तकारी कार्यों में खर्च होगा.

सिंह- विदेश यात्रा या दूर की यात्रा का प्रोगाम बन सकता है, संतान के संबंध में सुधार होगा, व्यवसायिक समस्याओं का समाधान होगा.

कन्या- दूसरों के दुख दर्द में साथ देकर मानसिक प्रसन्नता मिलेगी, मैत्री संबंधों में सुधार होगा, व्यवसायिक समस्याओं का समाधान होगा.

तुला- जोखिम के कार्यों से दूर रहें, चापलूस लोगों के कारण परेशानी होगी, धन मान-सम्मान की वृद्धि होगी, उपहार आदि मिलने का योग है.

वृश्चिक- बच्चों के कैरियर और पढ़ाई की चिन्ता रहेगी, शांति से अच्छे समय का इन्तजार करें, ऐसा कोई कार्य न करें, जिससे आपको किसी के सामने नीचा देखना पड़े.

धनु- अति उत्साह में जोखिम भरा निर्णय ले सकते हैं,नौकरी में पदभार बढेगा, आत्मविश्वास बना रहेगा, किसी नये कार्य की शुरूआत होगी.

मकर- साझेदारी में मनमुटाव के कारण कार्य छोड़ने का मन बन सकता है, नये संपर्क बढ़ेंगे, जीवनसाथी का सहयोग रहेगा, व्यर्थ की परेशानी होगी.

कुम्भ- कार्यस्थल पर कुछ कठोर निर्णय लेना पड़ेंगे, कार्य की अधिकता रहेगी, साझेदारी के कारण कार्यों में विशेष सतर्कता रखें, राजनैतिक व्यस्तता बनी रहेगी.

मीन- महत्वपूर्ण कार्यों में दुविधा की स्थिति नुकसानदायी रहेगी, पुराने निवेश का लाभ मिलेगा, परिश्रम अधिक करना होगा, अतिथि आगमन हो सकता है.

उदयकालीन ग्रह चाल

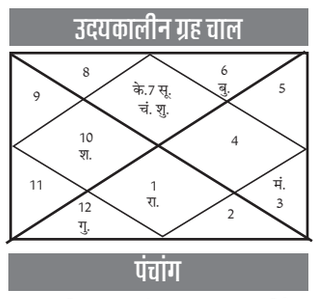

पंचांग

रा.मि. 13 संवत् 2082 कार्तिक शुक्ल चर्तुदशी भौमवासरे रात 9/33, रेवती नक्षत्रे दिन 11/49, वज्र योगे दिन 4/1, गर करणे सू.उ. 6/30, सू.अ. 5/30, चन्द्रचार मीन दिन 11/49 से मेष, पर्व- श्री वैकुण्ठ चर्तुदशी, शु.रा. 1,3,4,7,8,11 अ.रा. 2,5,6,9,10,12 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

कार्तिक शुक्ल चर्तुदशी को रेवती नक्षत्र के प्रभाव से उड़द, गेहूँ, मोट, अरंडी, बिनौला, घी, तेल, के भाव में तेजी होगी, रूई, कपास, जूट, पाट, बारदाना, हैसियन, के भाव में साधरण तेजी होगी. भाग्यांक 1552 है.

SUDOKU 7202

5		9		8	3	2		
	2		4					8
3	8		5	2	6	1		
	7						9	5
9		3	6		8	7		4
2	6						1	
		5	2	7	1		8	6
6					4		7	
		8	9	6		4		2

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7201

8	2	5	3	6	7	9	1	4
4	6	1	8	9	2	3	7	5
3	7	9	1	5	4	6	8	2
1	3	7	4	2	9	5	6	8
6	5	2	7	1	8	4	9	3
9	8	4	6	3	5	1	2	7
2	4	6	9	8	3	7	5	1
5	1	3	2	7	6	8	4	9
7	9	8	5	4	1	2	3	6